श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

राजस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर का
29वां दीक्षांत समारोह

दिनांक 19 दिसम्बर, 2019 **समय प्रात : 11.00 बजे**

विश्वविद्यालय परिसर, जयपुर

माननीय श्री भंवर सिंह भाटी जी, उच्च शिक्षा मंत्री, राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.के. कोठारी जी, सिण्डीकेट, सीनेट व शैक्षणिक परिषद् के माननीय सदस्यगण, आमंत्रित अतिथिगण, विभिन्न संकायों के अधिष्ठातागण, निदेशकगण, शिक्षकगण, विद्यार्थियों, उनके अभिभावकगण, भाइयो, बहनो, पत्रकार बन्धुओ और छायाकार मित्रो।

राजस्थान विश्वविद्यालय के इस 29वें दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता हो रही है। मैं इस पुनीत कार्य के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ।

एक श्रेष्ठ राष्ट्र के निर्माण में विश्वविद्यालय की भूमिका से हम सभी परिचित हैं। भारत के विश्वविद्यालय भी भारतीय प्रजातंत्र एवं गणतंत्र की भावना के अनुरूप समानता के सिद्धान्त के अनुसार उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार में संलग्न हैं। उच्च शिक्षा का प्रयोजन यह भी है कि विद्यार्थी जाति, धर्म, समुदाय आदि की संकीर्णताओं से मुक्त हों तथा योग्यता एवं गुणवत्ता उनकी पहचान का आधार बने।

राजस्थान विश्वविद्यालय प्रदेश का सबसे पुराना एवं प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। यह विश्वविद्यालय देश–विदेश के विविध क्षेत्रों में कार्यरत यशस्वी प्रतिभाओं का निर्माता, लब्धप्रतिष्ठ शीर्षस्थ विद्वानों की कर्मस्थली तथा ज्ञान के विभिन्न अनुषंगों में आधारभूत शोध एवं नवाचारों का सर्जक रहा है। राजस्थान विश्वविद्यालय की गौरव–गाथा अमिट एवं अविस्मरणीय रही है। राजस्थान विश्वविद्यालय को इस समय नैक द्वारा ''ए'' ग्रेड प्रदत्त है तथा University with Potential for Excellence के अन्तर्गत यह भारत के शीर्षस्थ पन्द्रह विश्वविद्यालयों में चयनित है।

भारतीय परम्परा में कहा गया है कि 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् शिक्षा वह है जो व्यक्ति को अनिश्चितताओं और अस्पष्टताओं से मुक्त करती है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था कि '' सभी का शिक्षित होना समाज के हित में है। मानवीय ज्ञान सार्वजनिक सम्पत्ति है। भारत जिन समस्याओं का सामना कर रहा है उसका मूल कारण इसकी 'राष्ट्रीय पहचान' की उपेक्षा है। ''

श्री उपाध्याय ने कहा था कि '' जरूरी है कि हम अपनी राष्ट्रीय पहचान के बारे में सोचें, इसके बिना आजादी का कोई अर्थ नहीं है। सम्यक् शिक्षा के माध्यम से हम अपनी राष्ट्रीय पहचान में प्रतिष्ठित हो सकते हैं। शिक्षा एक निवेश है। स्वतंत्रता तभी सार्थक हो सकती है जब वह हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति का साधन बन जाए। भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषता है कि यह जीवन को एक एकीकृत समग्र रूप में देखती है। ''

शिक्षा सांस्कृतिक प्रक्रिया है, समाजीकरण का माध्यम, शक्ति का स्रोत और शोषण से मुक्ति का मार्ग है। शिक्षा का व्यक्ति और समाज के विकास से गहरा रिश्ता है। राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी और अम्बेडकर के शिक्षा–दर्शन व स्वतन्त्रता–आन्दोलन के संकल्पों से अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षा के ढांचें एवं मूल्यों को हमें आगे बढ़ाना है।

एक श्रेष्ठ विश्वविद्यालय की पहचान एवं प्रगति के तीन आधार हैं – प्रथम : गुणवत्तापूर्ण, नवोन्मेषी एवं उपयोगी शोध कार्य। दूसरा : नियमित, सार्थक एवं रुचिपूर्ण अध्यापन कार्य तथा तीसरा : कुशल, त्वरित एवं उत्तरदायी प्रशासनिक तंत्र। इसके लिए विश्वविद्यालय के तीनों घटकों – शिक्षक, विद्यार्थी एवं कर्मचारियों के मध्य उत्साहपूर्ण तालमेल एवं समन्वय आवश्यक है।

प्रिय विद्यार्थियो,

विश्वविद्यालय से औपचारिक शिक्षा की प्रतीकात्मक समाप्ति भले ही आज हो रही है, किन्तु आप लोगों के व्यावहारिक जीवन की असली परीक्षा अब प्रारंभ होगी। विश्वविद्यालय में अध्ययन के दौरान आप लोगों ने बहुत कुछ सीखा है। भावी जीवन में उसका सही एवं सार्थक उपयोग करने का अब समय आ गया है। नई शुरूआत के लिए आप सभी को बहुत–बहुत शुभकामनाएँ।

शिक्षार्थी के रूप में आप पर विश्वविद्यालय व समाज का ऋण है। आप अपने जीवन को निष्ठावान एवं ईमानदार

बनायें। उत्तरदायी एवं सुसंस्कृत नागरिक के रूप में राष्ट्र की सेवा करें। शिक्षा–संस्थान विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण के प्रमुख केन्द्र होते हैं। शिक्षा अर्जन करते समय विद्यार्थी देश की स्वर्णिम परम्पराओं से परिचित हो जाते हैं। भविष्य की रूपरेखा तय करने का बोध भी विकसित हो जाता है। मुझे प्रसन्नता है कि राजस्थान विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने साहित्य, विज्ञान, राजनीति, रंगमंच, खेल, प्रशासन आदि अनेक क्षेत्रों में परिश्रम और दक्षता से अपनी प्रतिभा की पहचान देश–विदेश में बनाई है।

विभिन्न परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मैं बधाई देता हूँ। मेरी शुभकामना है कि वे इसी प्रकार सफलता एवं प्रगति के पथ पर अग्रसर होते रहें।

मुझे प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय की अनेक परीक्षाओं में छात्राओं ने उत्कृष्ट बन कर नारी शक्ति एवं प्रतिभा का गौरवपूर्ण प्रदर्शन किया है।

सम्माननीय शिक्षको,

प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा के इस दौर में वैश्विक चुनौतियों का सामना करने की क्षमता नई पीढ़ी में विकसित करनी होगी। इसके लिए विश्वविद्यालयों को अपने पाठ्यक्रमों को समयानुकूल, उपयोगी और अद्यतन बनाना होगा। कौशल–उन्मुख पाठ्यक्रम भी शुरू करने होंगे, जो विद्यार्थी को जीवन में सफल बना सकें। विद्यार्थियों को उचित परिवेश उपलब्ध कराये जाने की आज आवश्यकता है। इससे शोध व अनुसंधान में हमारे युवा अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे। विश्वविद्यालयों में संचालित शोध गतिविधियाँ छात्र की आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता को विकसित करने का साधन होती हैं। हमें शोध को अकादमिक गुणवत्ता एवं सामाजिक उपयोगिता, दोनों दृष्टियों से प्रभावी बनाना होगा।

आज इस अवसर पर मैं शिक्षकों से एक बात और कहना चाहता हूँ कि विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा रूपी रथ में आप लोगों की भूमिका सारथी की भांति होती है। शिक्षक के आचरण व व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थी पर पड़ता है। शिक्षकों

का अपने विद्यार्थियों के साथ जीवंत सम्बन्ध होना चाहिए। शिक्षक केवल पाठ्यक्रम के शिक्षक मात्र न बनें बल्कि वह राष्ट्र के भावी रूपान्तरण और राष्ट्र निर्माण के शिल्पकार की भी भूमिका निभाएँ।

एक सुंदर दृष्टिकोण को रूपान्तरित करने के लिए जब सभी लोग अभियान की तरह कार्य करते हैं, तो प्रगति एवं उत्कर्ष का मार्ग शीघ्र प्रशस्त होता है। ''कक्षा से कल्याण'' अभियान के अन्तर्गत यह सुनिश्चित किया गया कि न केवल कक्षाओं में नियमित अध्ययन–अध्यापन हो बल्कि कक्षाओं में विद्यार्थियों की अधिकतम भागीदारी हो तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य गुणवत्तापूर्ण संवाद हो।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है, हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 (क) में

हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे मूल कर्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त मूल कर्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्ड़ता व सामाजिक समरसता के लिए कर्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालयों में युवाओं को मूल कर्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल

कर्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

विश्वविद्यालय अपनी अकादमिक श्रेष्ठता और अद्यतन शोध द्वारा ही राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। विद्यार्थी एवं शोधार्थी जिम्मेदार नागरिक बनें। सच्चाई एवं ईमानदारी से दायित्वों का निवर्हन करें। राष्ट्र को विश्व पटल पर विश्व गुरू के रूप में स्थापित करने में एकजुट होकर सक्रिय एवं सार्थक भूमिका निभाएँ।

मेरी शुभकामना है कि विश्वविद्यालय की अकादमिक गुणवत्ता, शोध कार्य की मौलिकत्ता एवं नवीनता तथा सृजनात्मक मेधा एवं ऊर्जा निरन्तर प्रगतिमान हो तथा ज्ञान–विज्ञान की प्रखर रश्मियों से विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सदैव आलोकित होते रहें।

मैं एक बार पुनः उपाधि और पदक प्राप्तकर्ता विद्यार्थियों, शोधार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई देता हूँ।

धन्यवाद। जयहिन्द।